चन्द्रोदय-

(मकरध्वज)

लेखक—

वैद्यराज राधावल्लभ जी

सम्पादक "धन्वन्तरि"

श्रीधन्वन्तरयेनमः

चन्द्रोदयः

(मकरध्वज)

जिसमें

पारद शुद्धि, गंधिक शुद्धि, पारद के संस्कार, चन्द्रोदय के बनाने की विधि, भ्राष्टी बनाने-की विधि चन्द्रोदय के गुण, चन्द्रोदय के भिन्न २ रोगों में भिन्न २ अनु-पान आदि चन्द्रोदय सम्बन्धी सबही बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन है

लेखक,

राधावल्लभ वैद्यराज, सम्पादक "धन्वन्तरि"

प्रकाशक,

बांकेलाल गुप्त, मैनेजर धन्वन्तरि कार्य्यालय

प्रथम बार १००० प्रतियां	अप्रेल सन् १९१८	मूल्य प्रति पुस्तक ≡) आना

सिर्फ टायटिल और कवर पेज देशहितैषी प्रेस हाथरस में छपा।

वैद्यराज राधावल्लभ जी सम्पादक "धन्वन्तरि"
द्वारा लिखित और प्रकाशित।

आयुर्वेदीय नवीन पुस्तकें।

क्षयादर्श–क्षयरोगका विवेचन और विस्तार सहित चिकित्सा मू०॥=)
शरीर रचना–(सचित्र) अस्थियों का विस्तारपूर्वक वर्णन मू० ≡)
प्लीहा–तिल्ली के रोग निदान, चिकित्सा का विस्तारपूर्वक वर्णन मू०≡)
वेदों में वैद्यक ज्ञान–वेदों के मंत्रों द्वारा वैद्यक का वर्णन मू० ≡)
औपसर्गिक सन्निपात–प्लेग का विस्तारपूर्वक वर्णन मू० ≡)
मरणोन्मुखी आर्य्यचिकित्सा–वैद्यों को अवश्य पढ़नी चाहिये मू० =)
पंचकर्म विवेचन–पंचकर्म का विस्तारपूर्वक वर्णन मू० ।-)
प्राकृत ज्वर–मैलेरिया ज्वर का विस्तारपूर्वक वर्णन मू० ≡)
दोषविज्ञान–मू० =) ओज क्या है? -) रक्त मू० ≡)

नोट–जो सज्जन उपरोक्त ११ पुस्तकें एक साथ मँगावेंगे उनसे मूल्य २) लिया जायगा पर पोस्ट व्यय ।) ग्राहकों को पृथक् देने होंगे।

और भी लाभ–जो सज्जन एक साथ ११ पुस्तकें मंगावेंगे उन्हें "धन्वन्तरि" नामक मासिकपत्र १ वर्ष तक विना मूल्य प्रति मास भेजा जाया करेगा।

समालोचनाएँ—उपरोक्त ११ पुस्तकों की जिन पत्रों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है उनके नाम लिखे जाते हैं। सरस्वती प्रयाग, सुधानिधि प्रयाग, वैद्य मुरादाबाद, वैद्य कल्पतरु अहमदाबाद, चिकित्सक कानपुर, भारतमित्र कलकत्ता, मित्र रुस्तमगढ़, मिथिला मिहिर दरभंगा, हिन्दी बंगवासी कलकत्ता, हिंदी विहारी पटना, धर्मोदय मेरठ, ब्राह्मण सर्वस्व इटावा, नवजीवन प्रयाग, सनाढ्योपकारक आगरा, जैन गजट मथुरा, देशोपकारक लाहौर, हिन्दी समाचार दिल्ली, शिक्षा बांकीपुर, धन्वन्तरि गुजराती वीसनगर, वैद्यक-पत्रिका मराठी पूना, वेंकटेश्वर बम्बई।

पता–बांकेलाल गुप्त,
मैनेजर, धन्वन्तरि कार्य्यालय,
पोस्ट विजयगढ़ ज़िला अलीगढ़।

भूमिका ।

आयुर्वेदीय चिकित्सा में सर्वप्रधान औषधि चन्द्रोदय अर्थात् मकरध्वज है। जिस प्रकार चन्द्रमा अंधकार का नाश करता है उसी प्रकार चन्द्रोदय सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है और विशेष कर कामोत्तेजक, पौष्टिक वीर्य्यवर्धक क्लीवत्व नाशक है। आसन्न मृत्यु रोगी को आयुर्वेदीय चिकित्सक इसका ही सेवन करा आरोग्यलक्ष्मी प्रदान कर कीर्त्ति-लाभ करते हैं। ऐसी महौषधि प्रत्येक वैद्य और गृहस्थों के यहां रहनी चाहिये। किन्तु जैसी श्रेष्ठ औषधि है वैसेही इसका बनाना भी कठिन है। भारतवर्ष में बहुत कम वैद्य ऐसे हैं जो मकरध्वज बनाते हैं और जो मकरध्वज बनाते हैं वह इसका मूल्य इतना अधिक रखते हैं कि गरीब वैद्य और सर्वसाधारण इतना मूल्य देकर नहीं रख सकते इस अभाव को मिटाने के लिये श्रीमान् अग्रवाल भूषण वैद्यराज राधा-वल्लभजी ने इस निबन्ध की रचना कर वैद्य और सर्वसाधारण का बड़ा ही उपकार किया है। इसमें पारदशुद्धि, गंधक शुद्धि, स्वर्ण शुद्धि, गंधक जारण, चन्द्रोदय निर्माण विधि मात्रा अनुपान आदि मकरध्वज सम्बन्धी सब ही बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन है। वैद्य और सर्वसाधारण दोनों इसे पढ़ कर लाभ उठा सकते हैं।

बांकेलाल गुप्त मैनेजर

धन्वन्तरि औषधालय पोस्ट विजयगढ़ (अलीगढ़)।

श्रीधन्वन्तरि औषधालय का आयुर्वेदीय मासिक पत्र

आरोग्यसिन्धु

के प्रथमवर्ष के १२ अङ्कों की सुन्दर फायल बिकने को तैयार है। इसमें बड़े २ उत्तम सारगर्भित निम्न लिखित लेख हैं।

(१) **वेदों में वैद्यकज्ञान** इस लेख में ऋक, यजु, अथर्व, वेदों के अनेक मन्त्र जिसमें आयुर्वेदीय विषयों का वर्णन है तथा जिससे आयुर्वेद की प्राचीनता सिद्ध होती है।

(२) **ज्वर और लंघन** इस लेख में ज्वर में लंघन क्यों कराना चाहिये और कौन से ज्वर में लंघन कराने चाहिये इसका सविस्तार वर्णन है।

(३) **मलेरिया और क्यूनाइन** इसमें मलेरिया का सविस्तार वर्णन है और क्यूनाइन का खण्डन बड़ी योग्यता से किया है।

(४) **शरीर रचना** इसमें मस्तिष्क शक्ति सम्बन्धी अनेक चित्र दिये गये है और कौन से शक्ति कौन से स्थान में है उनका विवेचन डाक्टरी और वैद्यकीय मतानुसार किया है।

(५) **क्षय रोग** इस में क्षयरोग का बड़ी योग्यता पूर्वक विवेचन किया है।

(६) **रसायन औषधियों से आयुवृद्धि** इसमें रसायन औषधियों से आयुवृद्धि हो सकती है या नहीं और किस प्रकार हो सकती है इसका शास्त्रोक्त और अनेक युक्तियों द्वारा विवेचन किया है।

(७) **भूतविद्या** यह आयुर्वेद का एक अंग क्यों माना है उसका सारगर्भित विवेचन है।

(८) **मोती ज्वर और उसकी चिकित्सा** इसमें मोती ज्वर के भेद लक्षण और अनुभूत चिकित्सा का वर्णन है।

(९) **शीत ज्वर (मैलेरिया) की चिकित्सा** इस में अनेक प्रयोग अनुभूत और तत्काल लाभ देने वाले वर्णन किये हैं। इनके अतिरिक्त अनेक उपयोगी विचार पूर्ण लेख हैं जिनकी प्रशंसा अनेक सहयोगियों ने और वैद्य ने भी की है। मूल्य बिना जिल्द १॥) रु० जिल्ददार १॥।) रुपये।

पता—बांकेलाल गुप्त मैनेजर,

आरोग्यसिन्धु कार्यालय पोस्ट विजयगढ़, अलीगढ़।

आयुर्वेदीय रसायन चिकित्सा में सर्व प्रधान महौषधि चन्द्रोदय है। जैसे चन्द्र के उदय से सम्पूर्ण औषधियाँ वृद्धि को प्राप्त होती हैं और अंधकार का नाश होता है वैसे ही चन्द्रोदय की शान्तिमय ज्योत्स्ना से आधिव्याधि रूप दुःख दूर हो स्वास्थ्यमय जीवन प्राप्त होता है। चन्द्रोदय का दूसरा नाम मकरध्वज भी है। मकरध्वज कामदेव को कहते हैं। कामदेव के समान शारीरिक सौंदर्य, तेज बल, आदि बढ़ाने से इस का नाम मकरध्वज रक्खा है। ऐसा कोई रोग नहीं है जो चन्द्रोदय से दूर न हो आसन्नमृत्यु कफ रुद्ध कंठ पुरुष भी चन्द्रोदय के प्रभाव से चार बातें कर सका है इस का प्रचार भारतवर्ष के हर एक प्रदेशों में है। वैद्य लोगों को कठिन से कठिन रोगों में यशस्वी बनाने वाला यह चन्द्रोदय ही है। वैद्य लोग प्रायः इसे सन्निपात और नपुंसकता में अधिक व्यवहार करते हैं। परन्तु शास्त्रों के पर्यालोचन और अनुभव से जाना जाता है कि चन्द्रोदय के द्वारा अनुपान भेद से सब ही रोग दूर हो सकते हैं। एक दिन के बालक से लेकर सौ वर्ष की आयुवाला पुरुष भी इसे व्यवहार कर सकता है। सरदी गर्मी वर्षा आदि सब ही ऋतुओं में यह दिया जा सकता है।

चन्द्रोदय–पारद, गंधिक और स्वर्ण के योग से रसायन प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। इस में सर्व प्रधान वस्तु पारद है जितना अच्छा पारद इस में डाला जावे, उतना ही गुणशाली चन्द्रोदय बनता है। शिव वीर्य्य पारद की गुणावली से आयुर्वेदीय रस ग्रंथ भरे पड़े हैं। यदि किसी पदार्थ को ब्रह्म की उपमा दी गई है तो वह पारद ही है। जैसे ईश्वर अपने भक्तों को संसार समुद्र से पार करता है वैसे ही पारद रोगियों को रोग रूपी समुद्र से पार करता है। भगवत्पाद श्री गोविन्द भिक्षु अपने रस हृदय ग्रंथ में लिखते हैं कि—

मूर्च्छित्वा हरति रुजं, बन्धन मनुभूय मुक्ति दो भवति।
अमरी करोति सुमृतः कोऽन्यः करुणापरस्तस्मात ॥

अर्थ--यदि पारद को मूर्च्छित कर लिया जावे तो वह रोगों को दूर करता है (अर्थात् हम तो पारद को मूर्च्छित करते हैं परन्तु वह हमारा उपकार करता है) इसी प्रकार बन्धन को पाकर मुक्ति देता है। और मारा हुआ पारद, अमर करता है। इस से पारद के अतिरिक्त कौन दूसरा करुणा करने वाला है।

काष्ठौषध्योनागे नागं वङ्गेऽथ बङ्गमपि शुल्वे।
शुल्वं तारे तारं कनके कनकं च लीयते सूते ॥
परमात्मनीव नियतं, भवति लयो यत्र सर्व सत्वानाम्।
एकोऽसौ रसराजः शरीर मजरामरं कुरुते ॥

काष्ठादि, औषधियां नाग (शीशा) में, नागबंग में, और बंग ताम्र में, ताम्र चांदी सोने में, और सोना पारद में, लय हो जाता है। जिस प्रकार परमात्मा में सम्पूर्ण प्राणी लीन हो जाते हैं वैसे ही पारद में पूर्वोक्त प्रकार से सम्पूर्ण औषधियां लय हो जाती हैं। यह एकरस राज ही है जो शरीर को अजर अमर करता है॥

विषनौषधिपाक सिद्ध मेषद्घृत तैलाद्यपिदुर्निवार वीर्य्यम्
किमयंपुनरीश्वरांग जन्मा घनजाम्बूनदचन्द्रभानुजीर्णः

चन्द्रोदय—में मुख्य पदार्थ पारद है। और पारद में सम्पूर्ण औषधियों को लय करने की शक्ति है। इस से वैद्य पारद को सर्व गुण सम्पन्न बना सकता है और चाहें जौन सी शक्ति पारद से प्रगट कर सकता है। औषधियां किस प्रकार लय होती हैं इसे जान लेने से चन्द्रोदय बनाने की एक कठिन समस्या हल हो जाती है। एक पदार्थ में अन्य औषधियों का गुण लाना ही लयक्रम है। वैद्य लोग क्वाथ या अर्क बनाकर रोगी को पिलाया करते है, ऐसा करने से अनेक

औषधियों के गुण पानी में प्रविष्ट हो जाते हैं। औषधियां जल में उबल कर अपने गुणों को छोड़ देती हैं। निस्सारभाग फेंक दिया जाता है। इस परिपाटी से औषधियां जल में लय हो जाती हैं।

अरिष्ट आसवों द्वारा भी जल में अनेक औषधियों के गुण लाये जाते हैं कई दिनों तक जल में भीगी हुई औषधियां अपने गुणों को जल में पहुंचा देती हैं। और साथ ही जल में सुराभाव भी पैदा हो जाता है। अथवा यों कहिये कि जल ही औषधियों के गुणों को खींचकर उन्हें अपने में लय कर लेता है। इस प्रणाली से अच्छी तरह ज्ञात होता है कि जल में अनेक औषधियों के लय करने की शक्ति है। वेदों में स्पष्ट लिखा है "अप्स्वमृतम्" अर्थात् जल में अमृत विद्यमान है "अप्सु मे सोमोऽब्रवीत् अन्तर्विश्वानि भेषजा:" सोमने मुझ से कहा कि जल में सम्पूर्ण औषधियां विद्यमान हैं। इत्यादि श्रुतियों का उपर्युक्त ही भाव है॥ तैल, घृत, आदि द्रव पदार्थों में भी अनेक औषधियों के गुण लय किये जाते हैं। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में ऐसे सैंकड़ों प्रयोग इस बात की साक्षी स्वरूप लिखे हुए हैं। तैलादि सिद्ध करते समय स्वरस और कल्कादि की औषधियां अपने गुणों को छोड़ती हैं, और उन गुणों को तैल घृत आदि अपने में लय कर लेते हैं। सार हीन द्रव्य निकाल कर बाहर फेंक दिया जाता है। औषधियों के गुण अलग कर दूसरे पदार्थों में पहुंचाना बिना किसी प्रकार की गरमाई के नहीं होता। क्वाथ तैल घृत आदि अग्नि पर पकाये जाते हैं। अरिष्ट आसवों की सिद्धि में भूमि में रहने वाली बाहरी गरमी औषधियों के गुणों को अलग कर जल में पहुंचा देती है। धात्वादि में काष्ठादि औषधियों का क्वाथ बनाकर या स्वरस निकाल कर पहले उन औषधियों के गुण जल में लाये जाते हैं और उस जल को धात्वादि औषधियों के साथ मर्दन कर शुष्क कर देते हैं। गजपुटादि में धात्वादि पदार्थों को फूंकने से अग्नि द्वारा काष्ठादि औषधियों के गुण मात्र धातुओं में रह जाते हैं। और अग्नि के संसर्ग से उन फूंकी जाने वाली धातुओं में एक ऐसी (शोषणी) शक्ति पैदा होती है, जो काष्ठादि औषधियों के गुणों को अच्छी प्रकार खींचती हैं। काष्ठौषधियों के स्वरसादिकों के साथ धातुओं का मर्दन कर पुनः पुनः अग्नि द्वारा फूंकने का यही प्रयोजन है।

बंग और नाग को अग्नि के ऊपर पिघला कर जब उन में अनेक काष्ठादि औषधियों का प्रक्षेप डाला जाता है तब प्रचंड अग्नि उन काष्ठादि औषधियों को जलाती हुई उन के गुणों को बंग आदि में छाप कर देती है।

उपर्युक्त विवेचन से पाठक निम्न लिखित बातें अच्छी प्रकार जान सकते हैं

(१) जिन काष्ठादि औषधियों के गुण अन्य पदार्थों में लय किये जाते हैं वे औषधियां अग्नि द्वारा सार हीन होकर स्वरूप रहित होजाती हैं। क्योंकि हम देखते हैं कि अग्नि द्वारा जब काष्ठादि औषधियां जलाई जाती हैं तब वे हलकी होजाती हैं और उनका स्वरूप नष्ट हो जाता है।

(२) द्रव पदार्थों पर अग्नि के संयोग से काष्ठादि औषधियों के गुण सुगमता से चढ़ाये जाते हैं।

(३) बिना किसी प्रकार की गरमाई के औषधियों के गुण दूसरे पदार्थों में लय नहीं होते।

काष्ठादि औषधियों के समान जल तैल घृत आदि द्रव पदार्थों में लोह ताम्र स्वर्ण आदि धातुओं के गुणों का भी समावेश कियाजाता है। जैसे लोहासव में लोह सारस्वतारिष्ट में स्वर्णादि परन्तु ऐसा करने पर धातुओं की तोल कम नहीं होती अग्नि द्वारा जितना भाग गल सकता है वह द्रव पदार्थों में मिश्रित होजाता है तथा धातुओं के गुण भी उन पदार्थों में मिल जाते हैं।

एक धातु को दूसरी धातु में लय करने की विधि शास्त्रों में इस समय स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती (परन्तु पहले अवश्य होगी) कि किस प्रकार बंग में नाग का अधिकांश भाग न रहने पर भी उस में अधिकता से नाग के गुण लाये जा सकते हैं। काष्ठादि औषधियों के समान धात्वादि औषधियां मुलायम नहीं होतीं बार २ अग्नि में फूंक ने पर भी उन की तोल कम नहीं होती। एक धातु से दूसरी धातु सहसा प्रथक नहीं होती, तब किस प्रकार एक धातु के गुण दूसरी धातु में पहुंचाये जाते होंगे।

पारद ऐसा पदार्थ है कि इस में वनस्पति, रस, विष, धातु, आदि सब प्रकार की औषधियों के गुण लय होजाते हैं। पारद सब प्रकार की औषधियों में मिलकर और उन के गुणों को लेकर फिर अलग हो जाता है। स्वर्ण ताम्र मल्ल आदि के योग से पारद के स्वर्ण सिन्दूर, ताम्रसिन्दूर, मल्ल सिन्दूर, आदि सैकड़ों प्रयोग बनते हैं जो विद्वानों से छिपे नहीं हैं। पारद गंधिक और स्वर्ण के योग से चन्द्रोदय बनता है। पारद जब स्वर्ण के गुणों को ग्रहण करलेता है और पीछे मूर्छित कर दिया जाता है तब उसे चन्द्रोदय कहते हैं। पारद में नाग बंग आदि नैसर्गिक दोष रहते हैं। चन्द्रोदय बनाने से पहले इन्हें दूरकरने को पारद की शुद्धि की जाती है।

जब पारद शुद्ध हो जाता है तब उसमें ऐसी शक्ति की आवश्यकता होती है कि जो स्वर्ण के गुणों को अपने में लय कर ले। ऐसी शक्ति के प्राप्त कर लेने पर पारद को बुभुक्षित कहते हैं। पारद में जितनी भूख पैदा होती है उतना ही स्वर्ण के गुणों को ग्रहण करता है। पूर्ण बिभुक्षित पारद स्वर्ण को अपने स्वरूप में ऐसा मिला लेता है कि फिर वह पारद से जुदा नहीं हो सकता। यदि पारद अग्निताप से ऊपर उठता है तो वह स्वर्ण को साथ लिये हुये ही उठता है। बहुत से वैद्यों का मत है कि बुभुक्षित पारद में स्वर्ण का वजन नहीं बढ़ता। किन्तु हमारी सम्मति में यह विषय अभी विचारणीय है और जब तक प्रत्यक्ष न हो सिद्धान्तरूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि काष्ठादि औषधियों के समान यदि स्वर्ण अग्नि से तप्त होकर किसी प्रकार हलका हो जाता, तो सम्भव था कि पारद में वजन न बढ़े अथवा न्यून बढ़े। जब भस्म की हुई स्वर्ण की तोल भी कम नहीं होती तो पारद में ग्रास दिया हुआ स्वर्ण कहां चला जावेगा॥

तोल न बढ़ने के पक्षपाती उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार मनुष्य अपने खाने को पचा जाता है और उस का वजन नहीं बढ़ता किन्तु थोड़ा सा मूत्र ही बाहर निकलता है। इस ही प्रकार पारद जब स्वर्ण को खा जाता है तब मल स्वरूप स्वर्ण का थोड़ा अंशही नीचे बचता है और स्वर्ण का वजन पारद में बिलकुल नहीं बढ़ता। किन्तु इस दृष्टान्त में भी कई आपत्तियां हैं। मनुष्य क्रियाशील है वह कुछ न कुछ काम करता रहता है इस से शारीरिक धातु निरंतर कम होती रहती है आहार से वह कमी पूरी हो

जाती है। पौष्टिक वस्तुओं के खाते रहने से शरीर क्यों भारी होजाता है। इस लिये यह कहना कि आहार का वजन नहीं बढ़ता ठीक नहीं है। दूसरी बात यह है कि मनुष्य जब स्वर्ण के वर्क खाता है तब उस का वज़न शरीर में क्यों नहीं रहता। स्वर्ण के कठिन परमाणु हैं इस से उस के गुण मात्र ही शरीर में प्रवेश करते हैं। अतः उपर्युक्त दृष्टान्त पारद में स्वर्ण का वज़न न बढ़ने में चरितार्थ नहीं होता। पूर्ण बुभुक्षित पारद में स्वर्ण का अभिन्न सम्बन्ध हो सकता है। जैसे आहार का अधिकांश भाग रस रक्तादि बनकर शरीर रूप हो जाता है। और पुनः आहार के स्वरूप में नहीं आसकता इसी प्रकार पारद में दिया हुआ स्वर्ण का ग्रास पारद में इस प्रकार मिल जाता है कि फिर वह स्वर्ण की सूरत में नहीं आसकता। पारद में स्वर्ण को अभिन्न मिलाने वाली बुभुक्षा बड़े परिश्रम से उत्पन्न होती है। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में ऐसी बुभुक्षित विधि अच्छी प्रकार वर्णित है। परिश्रम शील वैद्यों को इस प्रकार का पारद अवश्य बनाना चाहिये। हम अपने औषधालय में पारदको पूर्ण बुभुक्षित करने का प्रारम्भ करने वाले हैं। जैसा अनुभव होगा पाठकों के सामने उपस्थित किया जावेगा।

पारद की दूसरी बुभुक्षा गंधिक के जारण से होती है। पार्वतीरज गंधिक के भी शास्त्रों में अनेक गुण वर्णित हैं। पारद ब्रह्म है तो गंधिक प्रकृति। ब्रह्म और प्रकृति के योग से जैसे संसार में अनेक प्रकार की रचनाएं दीख पड़ती हैं वैसे ही पारद गंधिक के योग से सैकड़ों प्रकार के प्रयोग निर्माण किये गये हैं। पारद के साथ गंधिक जारण से पारद में अनेक गुणों का प्रादुर्भाव होता है। जितनी अधिक गंधक जारण की जावे पारद उतनाही गुण शाली और बुभुक्षित होता जाता है। समान भाग से लेकर सहस्र गुणी गंधिक तक जारण करने का उल्लेख शास्त्रों में पाया जाता है। रस सिन्दूर स्वर्ण सिन्दूर आदि में प्रायः द्विगुण गंधिक जारण की जाती है इससे ही चन्द्रोदय से ये न्यून गुण वाले हैं। चन्द्रोदय बनाने के लिये पारद के साथ कम से कम षड् गुण गंधिक जारण करना चाहिये। छः गुनी गंधिक जारण होने पर पारद में इतनी बुभुक्षा पैदा होजाती है जिस से वह अग्नि के संयोग से स्वर्ण के अधिकांश गुणों को अपने में जज़्ब कर लेता है किन्तु पूर्ण बुभुक्षा नहीं होती जिस से स्वर्ण पारदसे जुदा न हो सके। रसायनिक प्रक्रिया से स्वर्ण के गुण चंद्रोदय में आजाते हैं। यह शंका नहीं करनी चाहिये कि मकरध्वज के

बनजाने पर जब स्वर्ण पारद के साथ मिलाहुआ नहीं रहता तब उस में स्वर्ण के गुण कैसे आजाते है। पारद और गंधिक के साथ रहकर स्वर्ण एक रासायनिक क्रिया Chemical action सम्पादन करता है इसी से मकरध्वज के सच्चे गुणों का जन्म होता है। मकरध्वज में स्वर्ण न डाला जावे तो उस में कोई विशेष गुण पैदा नहीं होसका। एक पदार्थ में यदि दूसरा पदार्थ न भी मिले परन्तु रासानिक प्रक्रिया से उसमें गुणों का परिवर्तन अवश्य होता है। जैसे तामे को दुग्ध में डाल कर औटाया जावे तो ताम्र दुग्ध में मिलता तो नहीं है परन्तु दुग्ध में ताम्र के विषैले गुण पैदा हो जाते है। इस ही प्रकार स्वर्ण के बिना संसर्ग के मकरध्वज—मकरध्वज ही नहीं कहा जा सकता इस रसायनिक क्रिया में पारद के साथ जब तक गंधिक रहती हो तब तक वह अग्नि के ताप से तप्त होकर भी उड़कर बाहर नहीं जाता किन्तु गंधिक के गुणों के साथ २ स्वर्ण के गुणों को भी ग्रहण करता रहता है।

शास्त्रों में प्रायः स्वर्ण घटित षड्गुण बलि जारित मकरध्वज या चन्द्रोदय का वर्णन पाया जाता है इस के बनाने में (१) पारदशुद्धि (२) गंधिक शुद्धि (३) सुवर्ण शुद्धि (४) गंधिक जारण। ये चार क्रियाएँ पहले की जाती है पीछे चन्द्रोदय का निर्माण होता है।

❀ पारद शुद्धि ❀

पारद में नाग (शीशा), बंग, (रांग), मल, अग्नि, (गरमाई) चंचलता विष गिरिदोष, अग्नि का न सहना—ये आठ नैसर्गिक दोष और पर्पटी, पाटली, भेदी, द्रावी, मलकरी अंधकारी, ध्वांक्षी, ये सात कंचुकीयां रहती हैं। चन्द्रोदय बनाने से पहले इन दोषों और कंचुकीओं को दूर कर देना चाहिये।

क्यों कि सदोष पारद के व्यवहार से अनेक रोग पैदा होते है।

(१) घर का धूमसा, ईंट काकुकुंआ, हल्दी ऊन की राख, चूना ये पांचों औषधियां समान भाग लेकर औरपारद से दूनी डालकर जंभीरी के रस से ३ दिन घोटे और पश्चात् ऊर्ध्व पातन यन्त्र से पारद को उड़ाकर निकाल ले अथवा कांजी से धोकर पारा निकाल ले।

इन्द्रायन के फल के चूर्ण में घोटने से नागदोष, अंकोल के चूर्ण से वंगदोष, अमलतास, से मलदोष, चित्रक के क्वाथ से अग्नि दोष, काले धतूरे से चापल्य त्रिफला, से विष दोष, त्रिकुटा से गिरि दोष, गोखरू से असह्याग्नि दोष दूर होते हैं। प्रति दोष को दूर करने के लिये पारद का सोलहवां भाग औषधि और काँजी डालकर घोटना चाहिये। एक २ दोष को दूर करने के लिये सात २ बार मर्दन करे।

(३) ग्वारपाठा रस, चित्रक, पीली सरसों, कटेहरी, त्रिफला इन के क्वाथ से तीन दिन पारद को घोटने से पारद का सप्त कंचुकी दोष दूर होता है।

(४) हिंगुल से निकाला हुआ पारद सर्व दोषों से रहित है। (यह सामान्य वाक्य है) गंधिक और पारद के योग से सिंगरफ (हिंगुल) बनता है। पारद के साथ मिली हुई गंधिक, अग्नि के ताप से पारद के सब प्रकार के दोष और कंचुकीओं को दूर कर देती है। सम्पूर्ण रस कर्मों में सिंगरफ का निकाला हुआ पारद बिना शुद्ध किये ही डालना चाहिये। सिंगरफ को नीबू के रस में घोट कर सुखा लेना पीछे डमरूयन्त्र द्वारा पारद निकाल कर काम में लाना चाहिये।

❁ गंधिक शुद्धि ❁

जितनी आमलासार गंधिक हो उस से चौथाई घृत ले लोहे की कढ़ाई में घृत चढ़ाकर उसे गरम करे पीछे उस में गंधिक को कूट कर डाले और मन्द २ अग्नि देवे। जब गंधिक पिघल कर घृत में अच्छी तरह मिल जाय तब उसे प्याज के रस में अथवा दुग्ध में छोड़ दे। प्याज का रस किसी बर्तन में भरकर ऊपर कपड़ा बांध दे और उस पर घृत मिली गंधिक डाले। गंधिक कपड़े से छन कर बर्तन के तल म बैठ जायगी उसे निकाल कर साफ़ कर ले। इस प्रकार कम से कम ७ बार गंधिक शुद्ध करनी चाहिये।

स्वर्ण शुद्धि

स्वर्ण के कंटक बेधी पत्रों को अग्नि में तपा २ कर (जब खूबलाल हो जावें) तैल, तक्र, गौमूत्र, कांजी, कुलथी का क्वाथ, इन में सात२ बार बुझाने से स्वर्ण शुद्ध हो जाता है ।

गंधिक जारण

पारद के साथ गंधिक का जारण कच्छप यन्त्र इष्टि का यन्त्र नलिका डमरू यन्त्र बालुका यन्त्र, आदि अनेक यन्त्रों द्वारा किया जाता है । जिस क्रिया द्वारा गंधिक का जारण शनैः २ होवे वही क्रिया उत्तम है । क्योंकि गंधिक जारण में जब तक गंधिक रहती है अग्नि का ताप पारद को लगता रहता है । यदि गंधिक धीरे २ जलती है तो पारद को अधिक समय तक अग्नि पर रहना पड़ता है । गंधिक के जल्दी जल जाने से पारद को अग्नि कम लगती है पारद को अग्नि पर रखने से उस में अनेक गुणों का प्रादुर्भाव होता है । रस ग्रन्थों में इस का बड़ा माहात्म्य लिखा है । सब से उत्तम विधि गंधिक जारण की यह है कि बालुका यन्त्र द्वारा कांच की आतिशी शीशी में कज्जली भर कर गंधिक का जारण किया जावे । द्विगुण गंधिक जारण से रस सिन्दूर बनता है उस रस सिन्दूर में फिर द्विगुण गंधिक डालकर शीशी में भर कर पूर्व विधि से रस सिन्दूर बनाले । इस प्रकार तीन बार द्विगुण गंधिक जला लैने से जो रस सिन्दूर बने उस का पारद डमरूयन्त्र से निकाल ले जिस प्रकार कि सिंगरफ से निकालते हैं । वह पारद ही षड्गुण गंधिक जारित है । गंधिक जारण के भी २ भेद हैं । अन्तधूर्म विपाचित और बहिर्धूम विपाचित । अन्तधूर्म विपाचित में गंधिक का धूम शीशी से बाहर नहीं निकालता, शीशी की डाट प्रथम ही लगा दी

जाती है इस से गंधिक का धूम शीशी के भीतरही भीतर घूँमता हुआ पारद को गुण युक्त बनाता रहता है। बहिधूर्म में धूम शीशी से बाहर निकलता रहता है इस से गंधिक कुछ जल्दी जल जाती है। बहिधूर्म से अन्तधूर्म में गुण अधिक हैं। और अन्तधूर्म की शीशी में सावधानी भी अधिक करनी पड़ती है। रस सिन्दूर बनाने की विधि जो आगे लिखेंगे इसे समझ कर शीशियों द्वारा गंधिक जारण करना चाहिये।

::o::

चन्द्रोदय निर्माण

चन्द्रोदय, रससिन्दूर, स्वर्ण सिन्दूर आदि कूपीपकरसायनों की निर्माण प्रणाली प्रायः एक समान है। ये रस बालुका यन्त्र द्वारा बनाये जाते हैं। इन रसों के बनाने से पहले आष्ट्री (भट्टी) नांद, शीशी आदि सामग्रियां ठीक २ बना लेनी चाहिये। जिस से चन्द्रोदयादि ठीक बन जावे।

(१) भट्टी—जितनी ऊंची नांद हो उस से दूनी ऊंची भट्टी बनानी चाहिये। भट्टी की गोलाई नांद की गोलाई से कुछ ज्यादा हो भट्टी को गोल चिनवाले और उसके मध्य भाग में दीवारों में नांद को टिकाने के लिये कुछ २ ईटों को निकास दे। आंच देने के लिये गोल या तिकोना मुख रखे। दीवालों में धूआं निकलने के लिये छिद्र रखे भट्टी को लीप स्हेस कर ठीक करले।

(२) नांद—मिट्टी की अच्छी पकीहुई लेनी चाहिये। यदि मिट्टी में जला हुआ लोहा और रेता मिलाकर उसकी नांद बनाकर पकाई जावे तो वह बहुत पुख्ता बनती है। नांदकी पैंदी में गूड़ी मिट्टी में भुस की रेनी मिलाकर उसका एक २ अंगुल लेप करे और नांद को अच्छी प्रकार सुखाले। नांद के बीच में एक पैसा के बराबर गोल छिद्र करदे और उसके बीच में एक पैसी ठीकरी रखदे जिस से उस के दो हिस्से हो जावें। नांद के किनारों पर लोहे के तार कसकर बांधदे। बहुत से वैद्य नांद में छिद्र नहीं करते और कोई छिद्र के उपर अभ्रक का पत्र रख देते हैं।

(२) शीशी—आतिशीकांच की शीशी जिस की कि गरदन लम्बी हो लेवे और उसपर मुलतानी मिट्टी में महीन कपड़े को सान २ कर सात कपरोटी करे जब तक कपरोटी न सूखजावे तब तक दूसरी कपरोटी न करे पहली सूखजावे तब दूसरी कपरोटी करे।

बनाने की विधि—स्वर्ण शुद्ध १भाग, षड्गुणगंधिक जारित पारद चार भाग, इन दोनों को खरल में पहले अच्छी प्रकार घोटले जब अच्छी तरह मिल जावे तब, आठ भाग शोधित गंधिक मिलाकर कज्जली करे। पीछे उस कज्जली में नरबाबन के पुष्पों के रस का एक पुट दे। दूसरा पुट घी ग्वार के रस का दे। यदि पुष्प न मिलें तो वट वृक्ष की कोमल जटाओं का रस निकाल करउस के पांच पुट दे। पुट देने पर कज्जली को खूब सुखाकर कपरोटी की हुई आतिशी शीशी में भरे। जिस शीशी में सेरभर कज्जली भरसके उस में पावभर कज्जली भरे। इस अन्दाज की शीशी लेनी चाहिये। भट्टी पर नांद को रखकर छिद्र के ऊपर शीशी को रक्खे यदि छिद्र के ऊपर भुड भुड (अभ्रक) का पत्र रख कर शीशी रक्खी जावे तो उसके टूटने का भय बहुत कम रहता है। शीशी को साक्षात अग्नि लगने से थोड़ीसी भूल होने पर शीशी टूट जाती है। छिद्र के चारों ओर मिट्टी का थामला सा बनादे। और उस पर शीशी जमा कर पीछे बालू भरे जिस से कि छिद्र से बाहर न निकलने पावे। कंठ पर्यन्त बालू भर शीशी की नाल को बाहर निकला रहने दे। पीछे शुभमुहूर्त में उत्तम ब्राह्मण के हाथ से अग्नि का प्रारम्भ करे। चार पांच अंगुल मोटी एक हाथ लम्बी बबूल की सूखी लकड़ियां चिरवा कर तय्यार रक्खे। भट्टी का मुंह इतना बड़ा हो जिस में तीन चार लकड़ी जासकें। पहले दो दो लकड़ी की आंच देवे और क्रमशः बढ़ाता जावे। यदि अन्तर्धूम बनाना हो तो शीशी में अष्टमांश कज्जली भरे और लम्बी नाल की शीशी ले। शीशी में ईट की घिसकर बनी हुई डाट लगाकर मुंह बन्द करदे। गुड़ और चूना को खूब पीसकर उस से शीशी और डाट से लगाकर मुद्रा करे। बहिर्धूम में डाट लगाने की आवश्यकता नहीं है। शीशी से धूम निकलने दे और शीशी के मुख में लोहे की सलाका डालकर गंधिक

जीर्ण हुई है या नहीं इसकी परीक्षा करता रहे। शीशी की नाल साफ करनी चाहिये। उस में आई हुई गंधिक को लोहे की गरम शलाका डालकर जलाता रहे। इस प्रकार जब गंधिक प्रायः जल जावे और धूम निकलना बंद होजावे और शीशी के मुंह में देखने से शीशी के भीतर तक लाल अंगार के समान दीख पड़े। तब शीशी के मुंह में पूर्वोक्त रीति से डाट लगाकर आठ पहर अग्नि दे। कभी २ गंधिक न जलाने से शीशी का मुंह अपने आप गंधिक से बन्द होजाता है तब बिना डाट लगे भी शीशी उतर आती है। अग्नि देना आरम्भ कर चार छः पहर पश्चात् अन्तधूर्म की शीशी की नालका स्पर्श करता रहे। यदि इतनी गरम होजाय कि जिसे छू न सकें। तो अग्नि कम कर दे जब नली में गंधिक भर जाती है तब शीशी की नाल बहुत तप्त नहीं रहती। ऐसा होनेपर जान ले कि गंधिक जल कर नाल में भर गई और पारद ऊपर आ रहा है। ८ पहर तक फिर अग्नि देवे। इस प्रकार चार दिन रात अग्नि देने से चन्द्रोदय की शीशी ठीक बन जाती है। स्वांग शीतल होने पर शीशी निकाल कर फोड़े। शीशी के नीचे भाग में स्वर्ण की भस्म मिलेगी उसे सावधानी से निकाल ले। अन्तर्धूम में शीशी के गले से ऊपर नाली में जली हुई गंधिक काली, लाल निकलेगी। उसे अलग करनेपर गले में एक टिकली सी निकलेगी बस वही चन्द्रोदय है। गंधिक को खुरच कर अलग कर दे। यह चन्द्रोदय रक्तवर्ण (सिंदरफ के समान) चमकीला और बहुत गुणों वाला बनेगा। इसी रीति से सब रस सिन्दूरादि बनाये जाते हैं। द्विगुण गंधिक जारण करने पर वह मूर्छित पारद, रस सिन्दूर कहाता है। और द्विगुण गंधिक के साथ स्वर्ण मिलाकर बना हुआ सिन्दूर स्वर्ण सिन्दूर कहाता है। इसी प्रकार हरिताल संखिया मनशिल ताम्र आदि के योग से तालसिन्दूर मल्लसिन्दूर शिलासिंदूर ताम्रसिन्दूरादि बनते हैं। और उन के भी अन्तर और बहिर्भेद होते है। संस्कारित बुभुक्षित तथा षड्गुण गंधिक जिस के साथ जलाई हो ऐसे पारद से स्वर्ण के सहयोग से बना हुआ सिन्दूर मकरध्वज अथवा चन्द्रोदय कहाता है।

षड्गुणबलिजारित स्वर्ण घटित मकरध्वज ।

गुणावली—मूर्छितस्तु जनार्दनः—मूर्छितपारदजनार्दन रूप है अर्थात् जिस प्रकार विष्णु भगवान संसार का पालन करते हैं वैसे ही मूर्छित पारद सम्पूर्ण रोगों से प्राणियों की रक्षा करता है ।

तुल्येतु गन्धके जीर्णे शुद्धाच्छत गुणोः रसः ।
द्विगुणे गन्धके जीर्णे सर्वथा सर्व कुष्टहा ॥
त्रिगुणे गन्धके जीर्णे कामिनीदर्पनाशनः ।
चतुर्गुणे तत्र जीर्णे बलीपलितनाशनः ॥
गन्धे पञ्च गुणे जीर्णे क्षयरोग हरो रसः ।
षड्गुणो गन्धके जीर्णे सर्व रोग हरो भवेत् ॥

बराबर गंधिक जारण से पारद सौगुना अधिक फलदाता है । द्विगुण गंधिक जारण से सम्पूर्ण कुष्ट नाशक. त्रिगुण गंधिक जारण से काम शक्ति बढ़े चतुर्गुण गंधिक जारिण से वली पलित नाशक, पंचगुण गंधिक जारिण से क्षय नाशक, और षड्गुण गंधिक जारित पारद सम्पूर्ण रोगों को दूर करता है ।

रसस्य, षड्गुणैर्गन्धैः पूर्ववत् कजली कृते॥
भविते पाचिते सम्यक् षड्गुणो बलिजारितः ।१।
बिधिवत्सेवितोह्येषः मुमूर्षुमपि जीवयेत ।
एतदभ्यासतश्चैव जरामरण नाशनम् ॥ २ ॥

अनुपान विशेषेण करोति विविधान गुणान्
ज्वरं त्रिदोषजं घोरं मन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥ ३॥
अन्यांश्च विविधान् रोगान् नाशयेन्नात्र संशयः
करोत्यग्नि वलं पुंसाम् वली पळित नाशनः ॥ ४॥
मेधायुः कान्तिजननः कामोद्दीपनकृन्महान्
अभ्यासात् साधकः स्त्रीणाम् शतं गच्छति नित्यशः।

पारद के साथ छगुनी गंधिक (और चतुर्थांश स्वर्ण) मिलाकर सम्यक् प्रकार से बनाया हुआ षड्गुणवलिजारित मकरध्वज यदि विधि पूर्वक सेवन किया जावे तो मरते हुये पुरुष को भी जीवित करता है । इस के निरन्तर अभ्यास करने से जरा (बुढापा) और मृत्यु दूर होती हैं अनुपान विशेष करके यह अनेक प्रकार के गुणों को करता है । ज्वर घोर सन्निपात मन्दाग्नि अरुचि और अन्य विविध प्रकार के रोग इस के सेवन से दूर होते हैं । मकरध्वज मनुष्यों की अग्नि और बळ को बढ़ाता है । वली पलित (सफेद बाल होना) रोग को दूर करता है । मेधा, आयु कान्ति और कामशक्ति को अत्यन्त बढ़ाता है । इस के सेवन करने वाला सैकड़ों स्त्रियों को नित्य सेवन करसकता है (यह अधिकालंकार है । अनुभव से जानाजाता है कि मकरध्वज कामशक्ति को अत्यन्त बढ़ाने वाला है । तभी तो इसका नाम मकरध्वज पड़ा है कुछ दिन सेवन करने से क्लीवत्व यानी नपुंसकता को दूर करता है ।

सद्योजीर्ण विपाचनोऽग्निजननो विड्बंधतृड् वान्तिनुत
मूत्रस्रावमपाकरोति मदन प्रोद्बोधकर्तारतो ॥
मूर्छां हन्ति सहिक्किकां मधुयुतो बल्यः प्रभादार्ढ्यकृत्।
शैत्य स्वेदहरः प्रमेह मथनश्चन्द्रोदयाख्यो रसः ॥
कासे श्वासे फिरंगाख्ये रोगेच परमोहितः ।
अपि वैद्य शतैस्त्यक्ता मरुचिंच नियच्छति ॥

भावार्थ—यद्यपि चन्द्रोदय में सम्पूर्ण रोगों को दूर करने की शक्ति है परन्तु इन रोगों में तो यह परमहित है। अजीर्ण को शीघ्र पचाता है। अग्नि को प्रदीप्त करता है। मलावरोध तृषा वमन मूत्र स्राव इनको दूरकरता है। मैथुन में काम शक्ति बढ़ाता है मूर्छा और हिचकी रोग को दूर करता है। शहद के साथ खाने से कान्ति और बल बढ़ाता है। सन्निपातादि रोग में आये हुये भयंकर शीत और पसीने को दूर करता है। प्रमेह काल श्वास और सैंकड़ों वैद्यों से छोड़ी हुई अरुचि इसके सेवन से दूर होजाती है।

शतानि पंच षट्कंचरोगाणां नाशयेत् ध्रुवम्
नाम्ना षड्गुण गन्धोयं विश्वा मित्रेण निर्मितः।

विश्वामित्र के निर्माण किये षट्गुण वलि जारित पारद से पांच सौ छै रोग निश्चय दूर होजाते हैं।

रस सिन्दूर—पारद भस्म की जगह प्रायः रस सिन्दूर का व्यवहार होता है। जो गुण द्विगुण गंधिक जारित पारद के हैं वेही रससिन्दूर के समझने चाहिये।

प्रमेहेश्वासकासेच षण्ढेत्क्षीणऽल्पवीर्य्य के
हरगौरी रसोदेयः सर्व रोग प्रशांतये।

हरगौरीरस (रस सिन्दूर) प्रमेह, श्वास,कास, नपुंसकता, क्षीण वीर्य रोग तथा सम्पूर्ण रोगों में देना चाहिये।

अपहरति रोगवृन्दं दृढयतिकायं महाबलं कुरुते
शुक्रशतांनिच सूते सिन्दूराख्योरसः पुसाम् ॥

रससिन्दूर रोगों के समूह को दूर करता है। शरीर को मजबूत करता है बल बढ़ाता है और मनुष्यों के शुक्र की अधिकता करता है

लाल सिन्दूर—अनुपान भेद में सर्व रोग नाशक है। विशेषकर शीतज्वर विषमज्वर, कफ प्रधान ज्वर, से अद्वतीय लाभ दिखाता है। रक्त विकार कुष्ठ आदि रोगों में भी परम लाभ दायक है।

मल्लसिन्दूर—सन्निपात रोग में जब शीत या कफ का दौरा होरहा हो तब यह चमत्कारिक गुण दिखाता है। वातव्याधि, अग्नि मांद्य, विसूचिकादि रोगों में परमहित है। अनुभव से जानागया है कि औपसर्गिक सन्निपात (प्लेग) में इस से बड़ा लाभ पहुंचता है। और क्लीवत्व की भी एक मात्र औषधि है।

ताम्र सिन्दूर—सन्निपात में बढ़ेहुये कफ हिचकी और श्वास को दूर करनेका अद्वितीय गुण रखता है। विसूचिका, अम्लपित्त, और शूल की परमौषधि है। गुल्म, बवासीर, हिक्का, मूर्च्छा, आदि रोगों में भी लाभदायक है।

अनुपान और मात्रा

भास्वज्ज्योतिर्यथाभाति काचे नीलादिके शुभे।
तथानुपान भेदेन क्रियावान्मकरध्वजः ॥

"जिस प्रकार सूर्य्य की किरणें एक प्रकार की होने पर भी नीलादिक कांच में विविध प्रकार की प्रकाशित होती है वैसे ही मकरध्वज अनुपान भेदसे अनेक कार्य्यों को अर्थात् गुणोंको करता है"

मकरध्वज और रससिन्दूर के अनुपानों में विशेष अन्तर नहीं है षड्गुणबलजारित मकरध्वज में उग्रशक्ति है और रससिन्दूर में स्वल्प गुण हैं। अनुपान प्रायः एकसे हैं। मकरध्वज की सामान्य मात्रा एक रत्ती की है। बच्चों को कम देना चाहिये। तीन वर्ष से छोटे बच्चे को चौथाई रत्ती तीन वर्ष से १० वर्ष तक के बालक को

आधी रत्ती और उस से बड़े आयु वाले को एकरत्ती देना चाहिये।

ज्वर--नवीन ज्वर में तुलसी के स्वरस के साथ।

वात ज्वर में---पान के स्वरस के साथ।

पित्तज्वर में---गिलोय और पित्तपापड़े के स्वरस के साथ।

कफज्वर में---अदरख के स्वरस के साथ।

सन्निपात में---अदरख के स्वरस या अष्टा विशेष जल के साथ।

विषमज्वर में---कालाजीरा तुलसी अथवा पिप्पली के साथ मिलाकर
सहत में चाटना।

जीर्णज्वर में---गिलोय सत्व, चौंसट पहरा पीपल अथवा सितोपलादि
चूर्ण के साथ मिलाकर सहत में चाटे।

नोट---उपरोक्त अनुपानों में स्वरस की मात्रा ६ माशे से लगा एक तोले तक लेनी चाहिये।

कृष्ण जीरा पीपलादि चार चार रत्ती सितोपलादि चूर्ण दो माशे देना चाहिये।

औपसर्गिक सन्निपात (प्लेग)---प्लेग पर मल्लसिन्दूर बहुत गुणदायक है। इसकी एकर रत्ती की मात्रा दोष भेद से अदरख, पान आदि के स्वरसों के साथ देनी चाहिये।

ज्वरातिसार--ज्वरातिसार में बिल्वपत्रों का स्वरस या क्वाथ अथवा कुड़ाकी छाल का स्वरस या क्वाथ, मकरध्वज के साथ अनुपान में लेने चाहिये। स्वरसों में मकरध्वज को अच्छी प्रकार मिलाकर और सहत मिलाकर चटावे। और यदि क्वाथ हो तो शहत में मकरध्वज को मिलाकर उस से क्वाथ पिलादे। स्वरस की मात्रा कम से कम एक तोला और क्वाथ की मात्रा एक छटांक लेनी चाहिये। मधु एक मात्रा यानी एकर रत्ती मकरध्वज में तीनर माशे मिलाना चाहिये।

सामान्य अतिसार—मकरध्वज, जायफल, लौंग, अफीम, मोच-रस, बेलगिरी, कपूर, ये समान भाग लेकर पानी में पीस दो २ रत्ती की गोली बनावे एक गोली जल के साथ खाय।

यदि आमातिसार हो—तो इन गोलियों के ऊपर धान्य पंचक क्वाथ जिस में कि नेत्रवाला १ बेलगिरी २ मोथा ३ धनियां ४ सोंठ ५ ये औषधियां हैं। चार चार माशे लेकर जौकुट कर पाव भर पानी में औटावे जब एक छटांक शेष रहजावे तब छान कर पिलावे। अथवा-सोंफ माशे १ बबूल के फूल माशे १ बेलगिरी माशे १ नोंन सुफेद रत्ती २ इनको छटांक भर पानी में पीस छान कर गोली के ऊपर पीवे।

रक्तातिसार-काले आम की छाल का स्वरस मासे ६ चूना कलई का रत्ती १ मकरध्वज रत्ती १ मिलाकर पीवे अथवा कच्चे बेल का गूदा तोले १ जल में भिगोकर छान कर गोली खाकर ऊपर से पीवे।

❀ संग्रहणी ❀

मकरध्वज रत्ती १ अहिफेन रत्ती १ इन दोनों को मिलाकर शहद में चाटकर ऊपर से गायका दुग्ध पीवे। थोड़ा २ दुग्ध बढ़ाता जावे और अन्न खाना कम करदे। शनै २ मकरध्वज की मात्रा बढ़ाते हुए दो रत्ती तक कर दे। दोनों समय देवे।

अथवा—मकरध्वज रत्ती १--धुली हुई भांग रती २--गंधक रती २ काली मिरच नग ३ इन को मिला कर गाय के तक्र के साथ प्रातः सायम् सेवन करे। तक्र का सेवन अधिक करे अन्न कम खावे—

अजीर्ण-मन्दाग्नि

मकरध्वज अथवा रस सिन्दूर एक तोला--शंख भस्म १ तोला

पीपल; पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ ये पाचों मिलाकर ८ आठ तोले, सुहागा भुना १ तोला, फिटकरी एक तोला सीप की भस्म एक तोला नोंन तीनों ३ तीन तोला इन को निम्बू के रस में घोट कर चना बरावर गोलियां बनावे--एक २ गोली दिन में ३ दफै लेवे इन के सेवन से अजीर्ण मन्दाग्नि दूर होकर भूख लगती है।

विशूचिका—षड्गुण वळिजारित मकरध्वज एक तोला ताम्र भस्म माशे ६ सींगिया विषशुद्ध एक तोले इनको अदरख के स्वरस में घोटकर दो दो रत्ती की गोलियां बनाले एक २ गोळी तीन घंटे पश्चात् देता रहे।

मल्लसिन्दूर—एक २ रत्ती मल्लसिन्दूर शहद माशे ४ और अदरख का स्वरस माशे ४ में मिलाकर चटाना चाहिये।

अम्लपित्त—पित्तपापड़ा, गिलोय, निम्बपत्र इन का स्वरस या क्वाथ तोले १ शहद माशे ४ मकरध्वज रत्ती १ मिलाकर चाटे।

अथवा--आंवले का स्वरस तोले १ शहद माशे ६ में मिलाकर प्रातः सायम् सेवन करे।

बवासीर—मकरध्वज------बाइबिरंग, मिरचकारी अभ्रक
१ रत्ती ४ चार रत्ती १ रत्ती १ रत्ती

इन को पालक के स्वरस में मिलाकर प्रातः सायम् चाटे।

॥ रक्तज बवासीर में ॥

—०—

मकरध्वज रती १—नागेश्वरपुष्प की केशर चार रती मक्खन माशे ६ शहद माशे ३ मिळाकर चाटे दोनों समय।

अथवा–मकरध्वज रती १ फौलाद भस्म रती २ इन दोनों को शहद में चाट कर ऊपर से कंकरोंदा बाल के स्वरस को ऊपर से पीवें—

कामला पाण्डु—लोहभस्म मण्डूरभस्म मकरध्वज ये सब एक एक भाग आंवला ४ भाग इन को पीसकर ४ चार रत्ती की पुड़िया बना ले एक एक पुड़िया प्रातः सायं शहद में मिला कर चाटे।

अथवा—त्रिफला और गिलोय का स्वरस ६ माशे अथवा दारु हल्दी और नीम की छाल का क्वाथ एक छटांक मकरध्वज एक २ रत्ती शहद में मिलाकर चाटकर ऊपर से पीवे—

रक्त पित्त—मकरध्वज एक रत्ती शहद में चाटकर ऊपर से दूब का स्वरस एक तोला अथवा अनार की कली तीन माशे, आधी छटांक पानी में पीस छान कर अथवा बांसे का स्वरस ६ माशे शहद ६ माशे मिलाकर दे।

क्षयरोग—मकरध्वज १ रत्ती, स्वर्ण भस्म आधी रत्ती, आंवले का चूर्ण, १ माशे, इन को शहद में चाटकर ऊपर से गुनगुना दूध पीना चाहिये। (२) मकरध्वज १ रत्ती शिलाजीत शुद्ध २ रत्ती इन दोनों को बांसे के स्वरस माशे ६ शहद ४ माशे में मिलाकर चाटना चाहिये

कास—पीपल छोटी मिचकारी, सोंठ; भारंगी, इन को समान भागले कूट छान कर एक एक माशे चूर्ण एक एक रत्ती मकरध्वज के साथ शहद में चाटना चाहिये।

(२) कटेरी का स्वरस माशे ३ बांसे का स्वरस माशे ३ शहद माशे ३ मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चाटना चाहिये।

श्वास—अपामार्ग की जड़ का स्वरस माशे ६ मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चाटना (२) बांसे के पत्ते आध सेर, २॥ सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहे तब छानकर फिर उस क्वाथ को मन्दाग्नि से पकावे जब लेहवत् चाटने के काबिल हो जाय तब उस लेह को तोललें, ५ तोले लेह में १माशे मकरध्वज, १माशे, अफीम, १ माशे अभ्रक,१माशे केशर इन को मिला कर घोटकर, गोलियां चना प्रमाण बनाले प्रातः सायं एक एक गोली शहद में मिलाकर चाटे

अरुचि—मकरध्वज १ माशे गंधक १ माशे अभ्रक १ माशे पीपल छोटी १ माशे सेंधा नमक १ माशे, इन को जल में घोट कर गोली चना बराबर बनावे। एक एक गोली प्रातः सायं बिजौरे का स्वरस माशे ६ सेंधा नोन रत्ती ४ शहद माशे ३ मिला कर चाटना चाहिये।

छर्दि—मकरध्वज या रस सिन्दूर, मुलेठी, बेरकी मींग लौंग, मोथा अंकुश खील धानकी पीपर छोटी दाल चीनी इलायची छोटी तेजपात, इन सब को समान भाग ले चन्दन के क्वाथ से घोटकर चार चार रत्ती की गोली बनावे और शहद में मिलाकर चाटे।

मूर्च्छा

मकरध्वज एक रत्ती, पीपल छोटी १ रत्ती, शहद में, मिला कर चाटे-इस के निरन्तर सेवन से स्त्रियों की मूर्च्छा-(हिस्टेरिया) रोग दूर हो जाता है।

उन्माद अपस्मार--मकरध्वज १ रत्ती-स्वर्ण भस्म आधी रत्ती ब्राह्मी शंखपुष्पी, बच, इन का चूर्ण १ माशे-शहद ४ माशा घृत गाय का ६ माशे मिलाकर खाय।

अथवा-ब्राह्मी, पेठा, शंखपुष्पी, इन तीनों के छः माशे स्वरस में बच, कूठ, का चूर्ण ८ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती शहद ३ माशे मिला कर चटावे। अथवा शंखहुली बच, ब्राह्मी, कूठ, छोटी इलायची, इन सबका चूर्ण माशे १ और मकरध्वज रत्ती १ मिला कर शहद में चाटना चाहिये।

वात व्याधि---चन्द्रोदय लोह भस्म स्वर्ण माक्षिक भस्म हरड़ काकड़ासिंगी शुद्धविष (मीठातेलिया) त्रिकुटा अरणी सुहागा इन सब को समान भाग ले मुंडी और निगुण्डी के रस में खरल कर दो दो रत्ती की गोली बनावे। एक गोली को पीपल छोटी ४ रत्ती में मिला कर खावे ऊपर से मजीठ का काथ, अथवा महारास्नादि काथ पीवे (२) मकरध्वज माशे १ कुचला शुद्ध २ माशे अफीम माशे २ काली मिर्च २ माशे इनको पान के रस में घोट कर दो दो रत्ती की गोली बनावे एक एक गोली प्रातः सायं जल के साथ रोगी को दे।

आम वात—मकरध्वज १ रत्ती अरन्ड की जड़ का रस माशे ३ अदरक का रस माशे ३ मिला कर चाटना चाहिये। अथवा लहसन का रस और सैंधेनिमक के साथ मकरध्वज दे।

वात रक्त---गिलोह का स्वरस और शहद अथवा पटोल पत्र का स्वरस और शहद, अथवा हल्दी का चूर्ण और शहद में मकरध्वज अथवा लाल सिन्दूर एक एक रत्ती मिला कर रोगी को देना चाहिये।

शूल रोग—मकरध्वज ताम्र भस्म कुचला त्रिकुटा हींग भुनी बच हरड़ और गंधिक ये औषधियां समान भाग लेकर पानी में पीस चार२ रत्ती की गोली बनावे। और गरम जल के साथ एक २ गोली प्रातः सायं देवे (२) त्रिफला, १ माशे लोह भस्म २ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती शहद ६ माशे घृत ४ माशे में मिलाकर चाटना चाहिये।

हृदय रोग----शृंग श्रृंगभस्म ४ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती, इन को शहत माशे ६ घी माशे ४ में मिला कर चाटना ऊपर से अर्जुन वृक्ष की छाल का काथ पीना।

मूत्र कृच्छ्र—शिलाजीत इलायची छोटी मिश्री मकरध्वज
१ रत्ती २ रत्ती ४ रत्ती १ रत्ती

इन को शहत में मिला कर चाटें। अथवा मकरध्वज रत्ती १ शहत में चाटकर ऊपर से गोखरू का क्वाथ पीवे।

बहु मूत्र--विदारीकंद का चूर्ण माशे ३ मकरध्वज रत्ती १ शहत में मिलाकर चाटना चाहिये। अथवा गूलर का स्वरस और शहत, केले का रस और शहत, जामुन की गुठली का चूर्ण और शहत, इन में से किसी १ प्रयोग में मकरध्वज एक २ रत्ती मिलाकर खाना चाहिये अथवा वेरोजा का सत्व १ माशे मकरध्वज १ रत्ती दोनों को मिलाकर कच्चे दूध के साथ सेवन करे।

प्रमेह--चन्द्रोदय अभ्रक इन दोनों को समान भाग ले आमले के रस में ७ दिन घोटे और दो दो रत्ती की गोली बनाकर शहत के साथ सेवन करे इस का नाम हरिशंकररस है। (२) चन्द्रोदय बंग और कुडा की छाल बराबर लेकर सेमर की जड़ के स्वरस में घोट कर चार चार रत्ती की गोली बनाले और एक २ गोली गिलोइ के स्वरस में शहत मिलाकर डस के साथ चाटे। (३) चन्द्रोदय अभ्रक इन दोनों को समान भाग ले और बड़ के दूध में घोटकर सुखाले पीछे मूसापुट में रखकर कुक्कट पुट की मन्द अग्नि से पचाले। दो रत्ती की मात्रा त्रिफला और शहत के साथ देवे। इसको प्रमेह सेतु कहते हैं।

(४) चन्द्रोदय अभ्रक और बंग इन तीनों को समान भागले शहत में १ दिन घोटे तीन रत्ती की मात्रा गूलर के फलों के एक माशे चूर्ण शहत माशे ३ में मिळाकर चटावे (५) चन्द्रोदय लोह भस्म मांडूर भस्म शिलाजीत स्वर्ण माक्षिक भस्म मनशिल भस्म त्रिकुटा त्रिफला अंकोल के बीज, कैथ, हलदी इन औषधियों को समान भाग ले और भांगरे के रस की ३० भावना देवे चार चार रत्ती की गोली बनावे एक एक गोली शहत में मिलाकर चाटे ऊपर से दूध पीवे। इसे मेह बद्ध रस कहते हैं। (६) मकरध्वज स्वर्ण भस्म वंग भस्म इन तीनों को शहत में घोटकर दोदो रत्ती की गोली बनावे। एक गोळी खाकर उपर से गुंजा की जड़ का चूर्ण रती २ शहत में मिलाकर चाटे

(आनन्द भैरव रस ; (७) चन्द्रोदय अभ्रक भस्म नाग रस स्वर्ण भस्म इन सब को समान भागले सब के बराबर बकापत्र की छाल का चूर्ण मिलावे चार चार रत्ती की मात्रा शहद में मिलाकर खाय ।(८) चन्द्रोदय बंग भस्म रूपरस कपूर अभ्रक एक २ तोले मोती स्वर्ण भस्म तीन तीन माशे इन को आंवरे के रस में घोट कर दो दो रत्ती की गोली बनावे एक २ गोली सुबह शाम दूध के साथ दे (९) मकरध्वज बंग लोह भस्म इलायची कपूर मिश्री आंवले जायफल नागकेशर मोच रस इन को समान भाग ले गिलोय के स्वरस और सेमर के रस से घोट कर चार २ रत्ती की गोली बनावे एक २ गोली शहद में मिलाकर चाटे (१०) मकरध्वज अभ्रक भस्म शिलाजीत वायविडंग सोना मक्खी की भस्म इन सब को घोट कर तीन २ रत्ती की मात्रा शहद और घी मिलाकर के खाये ।

नपुंसकता—(१) चन्द्रोदय १ तोला कपूर लौंग मिर्च जायफल ये चार २ तोले कस्तूरी ६ माशे इन सबको घोटकर तीन २ रत्ती की पुड़िया बनाले एक पुड़िया पान में रखकर के खावे ऊपर से दूध की मलाई मक्खन मिश्री मिलाकर खावे (२) मकरध्वज ४ तोले सुवर्ण भस्म २ तोळा बंग भस्म मोती भस्म लोह भस्म चांदी की भस्म कांसे की भस्म जायफल जाविश्री ये प्रत्येक एक २ तोले इन सबको पान के अर्क में घोटकर दो दो रत्ती की गोली बनावे एक २ गोळी प्रातः सायम् शहद में चाटकर ऊपर से दूध पीवे ।

स्तम्भनी गुटिका—चन्द्रोदय १ तोले केशर जायफल लौंग दो दो तोळे अफीम ४ तोळे भांग २ तोले कस्तूरी तीन माशे इन सब को पान के रस में घोटकर चना के बराबर गोली बनावे एक गोली रात्रि को घृत और मिश्री मिले दूध के साथ सेवन करे ॥

मेहरोग—मकरध्वज रत्ती १ शहद में मिलाकर चाट कर ऊपर से २ तोला शहद पावभर गरम पानी में मिलाकर पीना चाहिये ।

शोथ—मकरध्वज रत्ती १ बेलपत्र के स्वरस के साथ अथवा सांठकी जड़ के स्वरस के साथ सेवन करना चाहिये ॥

उपदंश—चोबचीनी का चूर्ण १ माशे मकरध्वज रत्ती २ दोनों को मिलाकर शहद में चाटे ॥

प्रदरोग—मकरध्वज १ रत्ती नागभस्म १ रत्ती रसौत ४ रत्ती शहद में मिलाकर चटावे (२) मकरध्वज रत्ती १ चौलाई का स्वरस १ तोले में मिलाकर चाटना चाहिये ।

वैद्यों के लिये—

स्वल्प मूल्य में आयुर्वेदीय औषधियां भेजने का हमने विशेष प्रबन्ध किया है। दिग्दर्शनार्थ कुछ औषधियों का मूल्य लिखा जाता है। सूचीपत्र मँगाकर देखिये।

कूपी पक्व रसायन।

नाम औषधियों का	ग्रंथों का नाम	मूल्य खेरीज के भाव का	मूल्य थोक के भावका
स्वर्णघटितषड्गुण बल जारित मकरध्वज अंतर्धूम विपाचित	भैषज्य रत्नावली	प्रतिमाशे४)	१ तो०२५)
,, बहिर्धूम ,,	,,	प्रतिमाशे२)	१ तो०१५)
स्वर्ण सिन्दूर-अंतर्धूम ,,	रसायन सार	३ माशे ६)	१ तो०१०)
,, बहिर्धूम ,,	,,	३ माशे ३)	१ तोला६)
रस सिन्दूर-अंतर्धूम ,,	रसेन्द्र सार संग्रह	३ माशे ३)	२॥ तो० ८)
,, बहिर्धूम ,,	,,	३ माशे २)	२॥ तो० ५)
मल्ल सिन्दूर ...	रसायन सार	६ माशे ३)	१ तोला४)
ताल सिन्दूर ...	,,	३ माशे ३)	१ तोला४)
ताम्र सिन्दूर ...	,,	३ माशे ३)	१ तोला४)
स्वर्ण वंग भस्म ...	रसप्रकारसुधाकर	३ माशे २)	१ तोला२)

पता—बांकेलाल गुप्त,
मैनेजर धन्वन्तरि औषधालय,
विजयगढ़ (अलीगढ़)।

Printed by Bhagwan Das Halna at the
Desh Hitaishi Press Hathras.